ॐ अर्हम्

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, गुरुग्राम

ज्ञानशाला दिवस 2026 - विस्तृत कार्यक्रम प्रतिवेदन

ज्ञानशाला -गुरुग्राम : "घर-घर जागे सद्संस्कार" का प्रेरक संदेश

दिनांक	स्थान	समय
रविवार, **30** अगस्त **2026**	**IBMR College, Gurugram**	प्रातःकालीन सत्र

रविवार, 30 अगस्त 2026 को IBMR College, Gurugram में ज्ञानशाला दिवस अत्यंत उत्साह, श्रद्धा और संस्कारमय वातावरण में आयोजित किया गया। ज्ञानशाला के बच्चों, प्रशिक्षिकाओं, अभिभावकों तथा तेरापंथ समाज की विभिन्न सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की सक्रिय सहभागिता ने आयोजन को जीवंत और प्रभावशाली बनाया।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के संदेश "घर-घर जागे सद्संस्कार : ज्ञानशाला का यह उपहार" को केंद्र में रखते हुए पूरे कार्यक्रम में नई पीढ़ी को धर्म, संस्कार, संयम और समाज से सुदृढ़ रूप से जोड़ने का भाव प्रमुख रहा।

कार्यक्रम का केंद्रीय भाव

ज्ञानशाला केवल बच्चों को धार्मिक जानकारी देने का स्थान नहीं, बल्कि उनके व्यक्तित्व में संस्कार, अनुशासन, विनम्रता, संयम और सही जीवन-दृष्टि विकसित करने का सशक्त माध्यम है।

रैली से हुआ संस्कारमय शुभारंभ

कार्यक्रम का शुभारंभ बच्चों, प्रशिक्षिकाओं और अभिभावकों की ज्ञानशाला दिवस रैली से हुआ। बच्चे अनुशासित पंक्तियों में ज्ञानशाला ध्वज एवं बैनर के साथ आगे बढ़े। रैली ने ज्ञानशाला के संदेश को दृश्य और जीवंत रूप में प्रस्तुत किया तथा उपस्थित समाजजनों में विशेष उत्साह उत्पन्न किया।

रैली में बच्चों की अनुशासित सहभागिता

बैनर के साथ बच्चों, प्रशिक्षिकाओं एवं समाजजनों की सहभागिता

कुशल समन्वय

सम्पूर्ण कार्यक्रम का कुशल समन्वय श्री वरुण गिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम के विभिन्न चरणों - रैली, सभा, प्रेरक वक्तव्य, बच्चों की सहभागिता और प्रोत्साहन - को सुव्यवस्थित रूप से जोड़ते हुए उन्होंने आयोजन को सहज, अनुशासित और प्रभावपूर्ण बनाया।

संस्थागत सहभागिता

कार्यक्रम में तेरापंथ समाज की विभिन्न संस्थाओं का प्रतिनिधित्व उल्लेखनीय रहा। श्रीमती पिकी कोठारी, सचिव - तेरापंथ महिला मंडल; श्री जितेंद्र जेरावाला, अध्यक्ष - श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, गुरुग्राम; तथा श्री दिलीप जैन (गिया), सचिव - सभा ने अपने उद्बोधनों से ज्ञानशाला की आवश्यकता, अभिभावकों की भूमिका और बच्चों के संस्कार निर्माण पर प्रकाश डाला।

इसके अतिरिक्त श्री प्रतीक बेगवानी, सचिव - तेरापंथ युवक परिषद; श्री मोहित जैन, अध्यक्ष - तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF); सुश्री साक्षी बोथरा, मुक्ता प्रशिक्षिका; तथा श्री अरुण जी जैन, पूर्व अध्यक्ष - TPF ने भी अपने प्रेरणादायी वक्तव्यों से बच्चों, अभिभावकों और प्रशिक्षिकाओं का उत्साहवर्धन किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन - मुख्य अंश

श्री जितेंद्र जेरावाला, अध्यक्ष - JSTS Gurugram

"ज्ञानशाला केवल धार्मिक ज्ञान का माध्यम नहीं है। यह वह स्थान है जहां ज्ञान के साथ संस्कार, संस्कारों के साथ संयम और संयम के साथ जीवन को सही दिशा मिलती है।"

अध्यक्षीय उद्बोधन में गुरुग्राम की विशेष भौगोलिक परिस्थिति का भी उल्लेख किया गया। तेरापंथ परिवार अलग-अलग सेक्टरों और क्षेत्रों में फैले हुए हैं; ऐसे में बच्चों को ज्ञानशाला तक लाने के लिए अभिभावकों को समय देना पड़ता है और प्रशिक्षिकाओं को भी निरंतर समर्पण के साथ कार्य करना पड़ता है। इस अतिरिक्त प्रयास को ज्ञानशाला के प्रति परिवारों की वास्तविक प्रतिबद्धता के रूप में रेखांकित किया गया।

उन्होंने यह भावना व्यक्त की कि ज्ञानशाला से जुड़ना केवल एक साप्ताहिक गतिविधि नहीं, बल्कि बच्चों के दीर्घकालीन व्यक्तित्व निर्माण में निवेश है। परिवार, प्रशिक्षिका और संस्था - इन तीनों की संयुक्त भूमिका से ही ज्ञानशाला का उद्देश्य पूर्ण रूप से साकार हो सकता है।

सचिवीय वक्तव्य - बच्चों से दो संकल्प

सभा के सचिव श्री दिलीप जैन (गिया) ने ज्ञानशाला को नई पीढ़ी और धर्मसंघ के बीच जीवंत सेतु बताते हुए बच्चों और अभिभावकों से नियमितता पर विशेष ध्यान देने का आग्रह किया। वक्तव्य का केंद्र केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि उसे व्यवहार में उतारना था।

दो स्पष्ट संकल्प

1. मैं ज्ञानशाला में नियमित रूप से उपस्थित रहूंगा / रहूंगी।
2. मैं ज्ञानशाला में सीखे संस्कारों को अपने दैनिक जीवन और व्यवहार में अपनाऊंगा / अपनाऊंगी।

सचिवीय संदेश का भाव यह था कि ज्ञानशाला की वास्तविक सफलता तब दिखाई देती है जब बच्चा कक्षा से सीखी बातों को घर, विद्यालय और समाज में अपने आचरण का हिस्सा बनाता है। नियमित उपस्थिति ज्ञान देती है, पर उसका व्यवहार में उतरना ही संस्कार का वास्तविक रूप है।

महिला मंडल एवं अन्य संस्थाओं का प्रेरक संदेश

श्रीमती पिकी कोठारी ने माताओं और परिवारों की भूमिका पर बल देते हुए बच्चों को नियमित रूप से ज्ञानशाला भेजने और घर के वातावरण में भी सीखे हुए संस्कारों को प्रोत्साहित करने का संदेश दिया। तेरापंथ युवक परिषद, TPF और अन्य वक्ताओं ने भी यह रेखांकित किया कि बच्चे समाज का भविष्य हैं और उनके भीतर संस्कारों की नींव मजबूत करना पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

प्रेरक वक्तव्य - सहभागियों का योगदान

वक्ता	दायित्व	प्रमुख संदेश
श्रीमती पिकी कोठारी	सचिव, तेरापंथ महिला मंडल	परिवार और मातृशक्ति की भूमिका; बच्चों की नियमित भागीदारी का आग्रह
श्री जितेंद्र जेरावाला	अध्यक्ष, JSTS Gurugram	ज्ञान, संस्कार और संयम के माध्यम से जीवन-दिशा
श्री दिलीप जैन (गिया)	सचिव, JSTS Gurugram	नियमित उपस्थिति और सीखे संस्कारों को व्यवहार में अपनाने के दो संकल्प
श्री प्रतीक बेगवानी	सचिव, तेरापंथ युवक परिषद	युवा पीढ़ी और बच्चों में धर्म-संस्कार के प्रति जुड़ाव
श्री मोहित जैन	अध्यक्ष, TPF	शिक्षा, व्यक्तित्व और मूल्यों के संतुलित विकास का महत्व
सुश्री साक्षी बोथरा	मुक्ता प्रशिक्षिका	ज्ञानशाला की शिक्षण प्रक्रिया और संस्कार निर्माण का महत्व
श्री अरुण जी जैन	पूर्व अध्यक्ष, TPF	बच्चों के प्रोत्साहन और समाज की सामूहिक जिम्मेदारी पर प्रेरक संदेश

सभी वक्तव्यों में एक साझा संदेश स्पष्ट रूप से उभरकर आया - बच्चों के संस्कार निर्माण का कार्य किसी एक संस्था या प्रशिक्षिका तक सीमित नहीं है। परिवार, ज्ञानशाला, सभा, महिला मंडल, युवक परिषद और TPF - सभी की सहभागिता से नई पीढ़ी को एक मजबूत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आधार दिया जा सकता है।

ज्ञानशाला दिवस रैली -सामूहिक सहभागिता की एक प्रेरक झलक

बाल प्रतिभा का सम्मान एवं उत्साहवर्धन

कार्यक्रम में बच्चों की सहभागिता और प्रयासों को प्रोत्साहित करने का विशेष अवसर भी रहा। बच्चों को सम्मानित कर उनमें सीखने, अनुशासन और संस्कारित जीवन के प्रति सकारात्मक प्रेरणा उत्पन्न की गई। ऐसे छोटे-छोटे प्रोत्साहन बच्चों को ज्ञानशाला से भावनात्मक रूप से जोड़ते हैं और उनके भीतर आत्मविश्वास का निर्माण करते हैं।

ज्ञानशाला दिवस के अवसर पर बाल प्रतिभा का सम्मान एवं उत्साहवर्धन

प्रशिक्षिकाओं के प्रति कृतज्ञता

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के निरंतर समर्पण, समय और सेवा की विशेष सराहना की गई। वे केवल पाठ पढ़ाने का कार्य नहीं करतीं, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व में धार्मिक समझ, अनुशासन, विनम्रता और संस्कारों का बीजारोपण करती हैं। उनकी भूमिका ज्ञानशाला की सबसे महत्वपूर्ण आधारशिलाओं में से एक है।

समापन और आगे का संकल्प

कार्यक्रम का समापन इस सामूहिक भावना के साथ हुआ कि गुरुग्राम में अधिक से अधिक 4 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को ज्ञानशाला से जोड़ा जाए, वर्तमान बच्चों की नियमितता बढ़ाई जाए और अभिभावकों को भी इस संस्कार-यात्रा का सक्रिय सहभागी बनाया जाए। ज्ञानशाला को केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि नई पीढ़ी के संस्कार निर्माण के निरंतर अभियान के रूप में आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया गया।

ज्ञानशाला का संदेश

“घर-घर जागे सद्संस्कार : ज्ञानशाला का यह उपहार”
ज्ञान से संस्कार, संस्कार से संयम और संयम से श्रेष्ठ जीवन की ओर।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, गुरुग्राम
ज्ञानशाला परिवार, गुरुग्राम